Q7. Theories of Truth → Correspondence, Coherence, programmatic.

Ans → हम अपने जीवन में हमेशा यह अनुभव करते हैं, कि मेरे द्वारा लिया गया निर्णय कुछ सत्य होते हैं, तो कुछ असत्य। जैसे हम कहते हैं, कि — "गुलाब लाल है।" तो साधारणतः मेरा निर्णय या कथन सत्य माना जायेगा, क्योंकि हम अपने व्यावहारिक जीवन मे भी "गुलाब को लाल" देखते हैं। लेकिन अगर हम कहें, कि "आज वर्षा होगी", तो यह निर्णय या कथन जरूरी नही सत्य होगा, असत्य भी हो सकता है। ऐसे भी हमारे द्वारा लिया गया निर्णय यदि व्यावहारिक दृष्टिकोण से सत्य पाया गया, तो उस निर्णय या कथन को हम "ज्ञान" की कोटि में रख देते हैं। इसके विपरित यदि हमारा निर्णय व्यवहारिक दृष्टिकोण से असत्य सिद्ध होता है, तो उसे हम 'ज्ञान' की कोटी से अलग रख देते हैं।

कुछ लोगों ने सत्य एवं असत्य दोनो ही निर्णयों को "ज्ञान" (Knowledge) का ही भेद माना है। सत्यता के संबंध में दो प्रकार के प्रश्न उठते हैं! —

(a) किसी निर्णय या वाक्य को सत्य कहने में हमारा अभिप्राय क्या है?.

(b) सत्य एवं असत्य में भेद (अन्तर) करने का मापक साधन क्या है?.

हमारे ज्ञान प्राप्ति के संबंध में निम्न विधियों की आवश्यकता पड़ती है! ——— हमारी अपनी

चेतन अवस्थाएं, प्राकृतिक पदार्थ, चेतना के अन्य केन्द्र तथा ईश्वरों के मन।

हम कहते हैं, कि "हमारे कान में दर्द हो रहा है", इसका क्या अर्थ है? मेरा अनुभव एक धारा है, जिसमें निरंतर गति होती रहती है। मेरे लिए यह स्वयं अनुभव है, और इसमें मैं संदेह कर ही नहीं सकती। मेरे लिए इसे जाँचने का कोई दूसरा मापक हो ही नहीं सकता है। अर्थात सत्यता का स्वरूप क्या है, सत्य की कसौटी क्या है, अर्थात कोई कथन या वाक्य की सत्यता की जाँच हम कैसे करते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर में कई सिद्धान्त सामने आये, जिनमें से तीन मुख्य सिद्धान्त हैं: →

(1) संवादिता सिद्धान्त :→ (Correspondence Theory)

सत्यता का अर्थ है, किसी निर्णय का वास्तविकता के साथ मेल (संवाद)। इसलिए जब किसी निर्णय का तथ्य से संवाद होता है, तब वह सत्य कहलाता है। यदि हम कहते हैं, कि — "गुलाब लाल है।" और वास्तव में गुलाब लाल है, तो मेरा निर्णय सत्य कहलायेगा। लेकिन वास्तव में वह गुलाब पीला हुआ, तो मेरा निर्णय असत्य कहलायेगा। इसी प्रकार निर्णयों और तथ्यों या वास्तविकता में मेल या संवाद सत्यता की कसौटी है। किसी निर्णय की सत्यता की परीक्षा इसी ~~की~~ के द्वारा होती है, कि उसका वास्तविकता से मेल या संवाद है, कि नहीं।

Scanned by CamScanner

अब प्रश्न यहाँ यह उठता है, कि किसी निर्णय का किसी वास्तविक वस्तु से मेल या "संवाद" का अर्थ क्या है? इसी प्रश्न के अन्त में संसक्ततावादी सिद्धान्त सामने आता है।

(2) संसक्तता वादी सिद्धान्त :→
(Coherence Theory)

संसक्तता का अर्थ है :→ "संगति"। संगति दो प्रकार की होती है, एक आत्म संगति और दूसरी परस्पर संगति। आत्म-संगति का अर्थ है – "आत्म - विरोध का अभाव"। कुछ निर्णय ऐसे होते हैं, जो आत्म - विरोधी होते हैं, जैसे — यह पुरुष और महिला दोनों हैं। इस निर्णय में पहले और दूसरे निर्णय में ~~परस्पर~~ ही एक तत्व का दूसरे तत्व के साथ विरोध है, यानि आत्म - विरोध है। दूसरे प्रकार की "संगति" है — "परस्पर संगति"। जब एक वाक्य का दूसरे वाक्यों के साथ विरोध नहीं हो, तो उनमें परस्पर संगति है। यहाँ ध्यान देने योग्य बातें यह है, कि यदि दो वाक्यों का क्षेत्र ही भिन्न हो, तो उनमें संगति या असंगति का प्रश्न ही नहीं उठता है। अतः वैसे निर्णय सत्य हैं, जिनमें "आत्म- संगति" हो और सम्बंधी निर्णयों से "परस्पर संगति" हो।
इस सिद्धान्त के अनुसार वैसे निर्णय सत्य हैं, जिनकी संसक्तता अन्य सम्बन्धी निर्णयों से हो।

3) व्यवहारवादी- सिद्धान्त
(Pragmatism theory) :— इस सिद्धान्त को व्यवहारिकतावादी सिद्धान्त भी कहा

जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार — "किसी निर्णय की सत्यता उसके परिणामों पर निर्भर करती है।" इसलिए कोई निर्णय तभी सत्य होगा, जब उसका परिणाम सन्तोषजनक हो। अर्थात् जो परिणाम लाभदायक तथा उपयोगी हो, तो वह निर्णय सत्य है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है, कि वही निर्णय सत्य है, जिसका परिणाम अनुभूति के द्वारा व्यावहारिक और सन्तोषजनक सिद्ध हो।

जगत ~~परिवर्तनशील~~ "परिवर्तनशील" है, और "परिवर्तन" अवास्तविक नहीं होता। इसलिए जो एक क्षेत्र में सत्य है, वह दूसरे क्षेत्र में नहीं भी हो सकता है, या जो आज सत्य है, वह भविष्य में भी सत्य हो। इसलिए सत्य स्थायी नहीं, परिवर्तनशील होता है।

"विलियम जेम्स" इस मत के संस्थापक हैं, जिन्होंने सत्यता की अवधारणा में दो बातों पर हमेशा महत्व दिया है। पहली बात में वे बतलाते हैं कि जब निर्णय का परिणाम लाभदायी तथा उपयोगी है, वही सत्य है। अतः "उपयोगिता" ही सत्य की कसौटी है। दूसरी बात यह है, कि कोई भी विचार या निर्णय अपने-आप में न सत्य है, न असत्य। क्योंकि सत्यता या असत्यता मनुष्य के द्वारा आरोपित होता है।

"व्यावहारिकतावादी-सिद्धान्त" निरपेक्ष ~~सत्यवाद~~ सत्यवाद के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है। क्योंकि "निरपेक्ष सत्यवाद" के अनुसार सत्य (i) निरपेक्ष (ii) स्थायी तथा (iii) बौद्धिक माना गया है। जबकि "व्यावहारिकतावादी" के अनुसार सत्य (i) सापेक्ष (ii) परिवर्तनशील तथा (iii) व्यावहारिक (Practical) है।

Scanned by CamScanner